त्याग पत्र का मसौदा

20-7-89

आदरणीय चौधरी देवी लाल जी,

जय हिन्द !

मार्च 1989 में मैंने आपको एक काफी लम्बा पत्र लिखा था। जिसका निचोड़ यह था "मैं ऐसा महसूस करने लगा हूँ कि अब मैं आपके लिये अनुपयुक्त (irrelevent) हो गया हूं। अगर यह बात दुरुस्त है तो मेरा त्याग-पत्र स्वीकार करें। यदि आप मुझे अनुपयुक्त (irrelevent) नही समझते तो खुल कर बात-चीत करने का मौका दें ताकि प्रदेश के बिगड़ते हालात की असल जानकारी और सुधार के लिए सुझाव दे सकूं।"

प्लानिंग बोर्ड की 16-3-89 की मीटिंग में कई महत्व वाले फैसले हुए मगर धीरे-धीरे फिर हालात बिगड़ने लगे। सब से ज्यादा धक्का मुझे चौधरी हुक्म सिंह मन्त्री के त्यागपत्र की आड़ में, हरियाणा राज्य जनता दल के गठन की घोषणा पर लगा। कहां तो यह यकीन दिलाया जा रहा था कि यह गठन उप-मुख्य मन्त्री, श्री पुनिया, आई० पी० एम० श्री रणजीत सिंह और शायद मेरे मुस्तर का मशविरा पर होगा। (इसीलिए तो उप-मुख्य मन्त्री ने श्री चौटाला को उसके सदर बनने पर मार्च में दोपहर का भोज दिया था और श्री पुनिया ने रात्रि भोज उसके सम्मान में दिया था) कहां यह नया जनता दल राज्य जनता दल न होकर चौटाला दल बन कर रह गया है और अब श्री चौटाला को यह कहने की हिम्मत हो गई है कि "अगर श्री देवी लाल उसके पिता न होकर केवल मुख्य मन्त्री होते तो वो पार्टी में अच्छे तरीके से अनुशासन लागू कर सकते।" वे भूल गये कि उसके पिता सी० एम० न होते तो वे जनता दल के प्रधान ही नही बन सकते थे। उपरोक्त सभी साथियों ने ऐसा महसूस किया और यही बात बाद में श्री रणजीत सिंह ने आपको हरियाणा भवन में बताई।

हरियाणा के सियासी हालात तेजी से बिगड़ते जा रहे हैं। मुरथल की घटना ने जनता को हिला दिया है। मकामी अफसरान और पंचायत देह गांवों की लाखों रुपयों की सालाना की आमदनी को बचाने के लिए नाजायज काब्जिान से कब्जा लेना चाहते थे। मगर न केवल पुलिस इमदाद रोकी गई बल्कि सरपंच और सारी पंचायत को गिरफ्तार करवाया गया। यह घोर अन्याय है। 300 के लगभग मूरथल निवासी आपसे मिलने आये थे। दिनांक 17-3-89 की शाम को मुझ से भी मिले। कौन है जो आपको इस तरह गुमराह करता है। बी० डी० पी० ओ० की रिपोर्ट पर पुलिस सहायता दी जा रही थी। श्री हुकम सिंह, मन्त्री, पंचायत ने जो फैसला लिया था वह भी नाजायज काबिजान ने स्वीकार नही किया। यह सब हालात आपसे छुपाये गए। सरपंच और पंचायत सदस्यों की नाजायज गिरफ्तारी की चर्चा न केवल सोनीपत जिले में और पड़ौस के देहात में है। कुछ दिनों में सारे हरियाणा में फैल जाएगी मेरा सुझाव है कि इसकी आला स्तर पर जांच करवाई जाये। और उपरोक्त हालात सिद्ध होने पर हरियाणा सरकार की तरफ से खास आदमी गांव में जाकर पंचायत से माफी मांगे और कब्जा नये पट्टेदारान को दिलायें। तब हालात सुधरने की गुंजाईश है। वरना बहुत सियासी नुकसान उठाना पड़ेगा। मेरी इस भविष्यवाणी को ध्यान में रखें।

मैंने यह इरादा तो पहले ही बना लिया था कि 20.8.90 को 75 वर्ष का होने पर राज्य की सभी एक्जीक्यूटीव जिम्मेदारियों से त्याग-पत्र दे दूंगा। यानि प्लानिंग बोर्ड की डिप्टी चेयरमैनशीप से त्याग-पत्र देकर अपनी जीवनी व जीवन के अनुभवों पर पुस्तकें लिखने में बाकी समय लगाऊंगा। लेकिन जैसा कि ऊपर लिखा है अब 20-8-89 से पहले ही आपसे त्याग-पत्र स्वीकार करने की इजाजत चाहूंगा।

जैसे हालात चल रहे हैं और दिन-प्रतिदिन सुधरने की बजाय हालात बिगड़ते जा रहे हैं उनमें आप ही बताईये कि मैं क्या करूं ? गांधी जी से और बहुत सी बातों के अलावा यह भी सीखा है कि जिसे आप बुराई समझते हैं उससे असहयोग किया जाये तो बुराई अवश्य कम होगी। इसी भावना से मैं अपना 20-8-89 तक त्याग-पत्र स्वीकार करने के लिए लिख रहा हूं। इससे पहले मन्जूर कर लें तो आपकी इच्छा है।

यह कदम इसलिए उठा रहा हूं कि आप सोचें और श्री चौटाला की गलत बातों को रोक कर अपनी छवि बिगड़ने से बचायें। राजस्थान में श्री कुम्भा राम आर्य की कितनी बड़ी छवि थी। गल्त रास्तों पर चलने और चुनावों में हारने के कारण एकदम खत्म हो गयी।

बहुत आदर के साथ,

आपका साथी,

Shri Jain's Realgnation from Planning Board Dated 25-7-89

Chandigarh
25-7-89

Respected Ch. Devi Lal Ji,

Kindly allow me to resign from the post of Deputy Chairman Planning Board as in future, so long as live, I want to devote my energies to the attainment of complete independence, instead of enjoying so called fruits of incomplete independence (political only).

I wish to thank you for all the co-operation you gave me in the performance of my duties.

Ch. Devi Lal
C.M.
Haryana

Mool Chand Jain
25-7-89
Deputy Chairman Planning Board

"श्री जैन का पत्र दिनांक 10-8-89 जो मुख्य मंत्री को त्याग पत्र के बाद लिखा गया"

आदरणीय चौधरी देवी लाल जी,

जय हिन्द !

10-8-89

ये पत्र निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातों के लिए लिख रहा हूं :-

1 a.) रोहतक में नगरपालिकाओं के सदस्यों की सभा 2 8.88 में C.E.O. की पोस्ट खत्म करने की घोषणा करके आप ने जो एतिहासिक फैसला किया है, उसके लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूं। ये फैसला एतिहासिक इसलिये है कि इससे न केवल चुने हुए प्रतिनिधियों को पूरे अधिकार मिलेगें, अपितु दर्जा अवल की नगरपालिकाओं में लाखो रुपये वार्षिक की बचत होगी। राजनैतिक तौर पर भी इसका पूरा लाभ होगा। नगर के निवासी हमें अपना विरोधी समझते हैं। नगरपालिका सदस्य भी ऐसा समझते थे। ये असर काफी हद तक दूर हो जायेगा। इसके साथ-2 ये कदम कांग्रेसियो के मुंह पर चपत होगा जो लोकल वाडिस में प्रजातन्त्र की झुठी दुहाई दे रहे हैं। इसलिए राष्ट्र स्तर में भी इसकी सराहना होगी।

b) इस फैसले के अनुसार म्यूनिसिपल एक्ट में संशोधन करना होगा। मामला मन्त्री मण्डल में लाकर अध्यादेश लाना होगा या विधान सभा के आने वाले अधिवेशन में संशोधन पास करना होगा। ये काम जितना जल्दी हो जाये, उतना ही अधिक लाभ आने वाले लोक सभा चुनाव मिलेगा।

c) मुझे ये जान कर आश्चर्य हुआ कि कुछ लोग आप को इस निर्णय को बदलने की सलाह दे रहे हैं। यह बहुत ही गलत बात होगी। ट्रिब्यून समेत कितने ही समाचार पत्रों मे इसकी सराहना हो चुकी है। एडीटिरियल लिये जा चुके हैं। अब आप इस पर अमल न करायेगे तो कौन हमारी सरकार पर मरोसा करेगा ?

2. मुरथल पंचायत के मामले की चर्चा मैंने आप से की थी। विस्तार से इसकी चर्चा में अपने 20.7.87 के लिए त्याग पत्र मसोदे में की है। जिसकी प्रति इस पत्र के साथ संलग्न है। इसे दौहराने की आवश्यकता नही। मगर ये बात सारे इलाके में फैल गई है कि दिल्ली (हरियाणा भवन) से वायरलैस आने पर न केवल पुलिस सहायता रोकी गई अपितु सरपंच व सभी पंचों

downloaded from moolchandjain.org

को गिरफ्तार किया गया । मुरथल गांव की अपनी 10-12 हजार वोट है । बहुमत हमारे खिलाफ हो गया है । आने वाले लोक सभा चुनाव में अति हानि सहन करनी होगी । न्याय का तकाजा है कि नाजायज कब्जा करने वालों से यदि कब्जा नहीं लेना तो कम से कम हुक्म चन्द जी मन्त्री पंचायत विभाग का निर्णय मानने पर उन्हें मजबूर किया जाये वरना ये गांव व इलाका दीवार की भान्ति हमारे उम्मीदवार के खिलाफ खड़े हो जायेंगे । पता लगा है कि उस क्षेत्र पचासों सरपंच इस सम्बन्ध मे आपको मिले भी हैं ।

3. एक छोटी निजी सी बात । Record को ठीक करने के लिए कर रहा हूं । 25-7-89 को श्री पूनिया की उपस्थिति में मैंने त्याग पत्र दे दिया था । तो आपने न केवल इसे नां मन्जूर किया किन्तु यह आदेश दिया कि इसकी कही चर्चा न हो । इसलिये किसी भी समाचार पत्रों में 29 7.89 से पहले इसकी चर्चा न हुई । उस दिन भी त्याग-पत्र स्वीकार होने की सरकारी घोषणा के बाद चर्चा की ।

4. मन्त्री मित्रों ने मुझे बताया कि आप ने उन्हें कहा कि 28 7.89 को इसलिए स्वीकार किया कि मैंने आपको यह कहा था कि मैं अक्तूबर के बाद इस पद पर काम न करूंगा । आप ने वास्तव में इन मित्रों को यह कहा तो आप को अपितु उनको गलत फहमी हो गई । असल बात यह है कि जिस समय 28.7.89 को सांय 4 बजे मैं आपसे चर्चा कर रहा था कि मैं अगले साल 20.8.90 को 75 वर्ष का हो जाऊंगा उसके बाद मैं राज्य स्तर पर कोई Executive काम न करूंगा । मेरी बात का अक्तूबर से कोई सम्बन्ध न था । उसी समय श्री दीपक आप के राजनैतिक सचिव में त्याग पत्र स्वीकार करने व श्री महाराज सिंह को मेरी बजाय मुकर्रर करने करने का आपका आदेश समतहीन अधिकारी को भेज दिया था । साढ़े चार पांच बजे तो ये दोनों आदेश Notification के लिये कार्यालय में पहुँच गये थे और लगभग साढ़े पांच बजे मुझे भी यह लिखित आदेश मेरे कार्यालय में मिल गया था । ऐसी बातों से मेरे जैसे व्यक्ति पर विशेष प्रभाव नहीं पडता । मगर इसका प्रभाव आप पर अवश्य पड़ता है । कौन यकीन करेगा कि इतनी जल्दी आप उस व्यक्ति को मेरी जगह नियुक्त करने का आदेश दे देगें जो खुल्म-खुला आपकी नुक्ताचीनी करता था और तीन-चार मास पहले अम्बाला में श्री भजन लाल का स्वागत कर रहा था । वैसे आप ने त्याग पत्र के स्वीकार होने पर मुझे आश्चर्य के साथ-2 अति प्रसन्ता हुई है । सारे राज्य में बहुत ही धांधलियों के कारण मैं बहुत तनाव में रहता था अब उससे काफी मुक्त हो गया हूँ ।

5. आपकी जानकारी के लिये मैं यहां ये बताना जरुरी समझता हूँ कि मैंने 20.7.89 को ही अपनी डायरी में त्याग पत्र का मसौदा लिख लिया था । जो देहली से अपनी वापसी पर आप को देना था । आप उन दिनों लोकसभा के विरोधी सदस्यों के त्याग पत्र दिलवाने के महत्वपूर्ण काम में लगे हुए । इसलिये कई दिन दिल्ली रहे और मैं उस त्याग पत्र को न भेज सका । अब उसकी नकल इन पत्र के साथ भेज रहा हूँ । आशा है समय निकाल कर आप इसे भी पढ़ेंगे और मुझे इन तीनों त्याग पत्रों को Press में देने की अनुमति देगे । क्योंकि Press में कई प्रकार की अटकलें आ रही हैं । उन्हें स्पष्ट करना जरुरी हैं । यह बात स्पष्ट करना भी जरुरी है कि मैं न चौटाला ग्रुप में हूँ न रणजीत के ग्रुप में । केवल धांधलियों के खिलाफ हूँ ।

6. आप ने जो सम्मान व सहयोग मुझे दिया उसके लिए आपका धन्यवाद मैं पहले ही कर चुका हूं पहले की भांन्ति मैं अब भी आपका सहयोग दूंगा और साथ-2 रचनात्मक आलोचना करता रहुँगा ।

श्री कादयान ने सहकारी विभाग लेने में श्री रण सिंह मान को Bureau of Public Enterprize की प्रधानता से हटाने पर समाचार पत्रों में जो प्रतिक्रिया हुई है (खास तौर पर हमारे समर्थन समाचार पत्रों, पंजाब केसरी, हिन्द समाचार, जनसत्ता व Indian Express)) इस कारण बहुत तेजी से चुनाव की लहर हमारे विरुद्ध जा रही है अति सावधानी को जरुरत है परम् परमात्मा से यही प्रार्थना करता हुं कि हम सबको सद्बुद्धि दे ।

अति आदर के साथ

आपका पुराना साथी
(मूल चन्द जैन)

मुख्य मंत्री हरियाणा
CHIEF MINISTER HARYANA
सत्यमेव जयते

देवीलाल

मुख्य मन्त्री हरियाणा
चण्डीगढ़ ।

दिनांक 11-9-89

प्रिय जैन साहब,

आपका दिनांक 31-8-89 का लिखा हुआ पत्र मिला जिसे मैंने बड़े गौर से पढ़ा । मैं आप द्वारा लिखी गई बातों से सहमत हूं । 27-8- 89 को जनता दल द्वारा आपको कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में आमन्त्रित न करने का मैं पता करवा रहा हूँ । आप हमारे माननीय साथी और दल के वरिष्ठ नेता हैं । जिन समितियों के आप पहले सदस्य थे उनके बारे में भी मैं आपको सूचित करना चाहता हूं कि जिन समितियों के आप व्यक्तिगत रुप से सदस्य मनोनीत किये गए थे वे आप यथावत बने रहेंगे । इस सम्बन्ध में, मैं आवश्यक आदेश जारी कर रहा हूं ।

आप किसी भी समय किसी भी स्थान पर आकर मुझे मिल सकते हैं और बात कर सकते हैं ।

शुभ-कामनाओं सहित,

आपका
(देवी लाल)

बाबू मूल चन्द जैन,
भूतपूर्व उपाध्यक्ष, हरियाणा, रा० यो० बो०
माल रोड, करनाल ।

downloaded from moolchandjain.org